देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
सितम्बर 2024
Vol.-20, Issue-3

Impact Factor
7.523

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

गीना प्रकाशन भिवानी हरियाणा द्वारा प्रकाशित योद्धा लड़की कुइली (हिंदी अनुवाद) के लोकार्पण समारोह में प्रकाशन प्रतिनिधि के रूप में वित्त मंत्री आदरणीया निर्मला सीतारमन् जी से सम्मान ग्रहण करते हैं श्री मोहम्मद सलीम जी।

सम्पादक : डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

46.	बिहार में कृषि और कृषक की समस्या और समाधान का साहित्य अवलोकन	Dr. Sarvjeet Kumar Singh	221-224
47.	21 वी सदी के हिंदी उपन्यास जिंदगी 50-50 में किन्नर विमर्श	डी श्रीदेवी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	225-228
48.	हौसलों ने हुनर को उड़ान दिया : परिप्रेक्ष्य विकलांग विमर्श	डॉ. चन्द्रशेखर सिंह	229-232
49.	महिला सशक्तिकरण में मानवाधिकार की भूमिका	डॉ0 विक्रम सिंह	233-236
50.	**जनजाति की अस्मिता**	**डॉ. रतन कुमार**	237-240
51.	ग्रामीण विकास में दुग्ध उद्योग का योगदान	डॉ0 सतीश सिंह यादव	241-244

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor:7.523 September 2024 Page No. : 225-228
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

21वी सदी के हिंदी उपन्यास जिंदगी 50-50 में किन्नर विमर्श

डी श्रीदेवी, शोधार्थी,
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, शोध निर्देशिका,
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज,
पल्लावरम, चेन्नई.

मानव सामाजिक प्राणी है। स्त्री और पुरुष इस समाज के नियम है। इन दोनों के अलावा एक और लिंग भी हैं जिसे तृतीय लिंग, किन्नर, हिजड़े जैसे नामों से जाने जाते है। इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में बहुत सारे उपन्यास, कहानी किन्नर विमर्श पर लिखे गए। इनमें भगवंत अनमोल जी कृत 'जिंदगी 50-50' बहुत प्रसिद्ध उपन्यासों में एक है।

इस उपन्यास किन्नर जीवन संघर्ष की गथा हैं। इस उपन्यास की मुख्य कथा नायक की प्रेम कहानी, नायक के द्वार अपने किन्नर पुत्र के लिए प्रेम, नायक के पिता का विरोध, नायक का द्वेष, नायक के छोटे भाई हर्षा के प्रति स्नेह आदि चित्रित है। इस उपन्यास में हर्षा और सूर्या के किन्नर जीवन में पाए गए अधूरेपन का विस्तार से विश्लेषण किया गया है। अनाया के जन्म चिह्न की कुरूपता के कारण उसके जीवन में आनेवाली समस्याओ पर प्रकाश डाला गया है।

मनुष्य अपने जीवन में सुख-दुख दोनो को अनुभव करते हुए चलता है। सामान्य मनुष्य से ज़्यादा किन्नर के रूप में पैदा होने की वजह से हर्षा और सूर्या के जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव, निंदा, परिहास, बेइज्जती आदि को सहना पड़ता है। हर किसी व्यक्ति को कोई न कोई कमी हैं। जिंदगी में कमियां व्यक्ति को मजबूत बनाती हैं और अच्छाइयां उसे आगे बढ़ाती हैं। लोगों को लगता है, पड़ोसी रहनेवालों की जिंदगी बहुत अच्छी है पर ऐसा नहीं होता, हर किसी की जिंदगी में कोई न कोई कमी होती हैं।

समाज की घृणा

एम एन सी में कार्यरत कथा नायक अनमोल को उसके सहकर्मी अनाया से प्रेम हुआ। अनाया देखने में जीरो फिगर जैसे लगती है। अनाया की गाला में जन्म चिह्न के असौंदर्य को देखकर, आफिस में सब लोगों के मन में उसके प्रति सहानुभूति का भाव होता है। लेखक के शब्दों में "सोते-जागते, चलते फिरते, खाते-पीते, घूमते-टहलते, उठते-बैठते यहां तक कि बात करते हुए भी हम जैसे लोग हमेशा उसे अपनी बॉडी लैंग्वेज से या फिर बोलकर एहसास दिलाते

रहते थे कि उसका चेहरा जला हुआ है और उसे हीन भावना का शिकार बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ते थे।"[1]

डॉक्टर जब अनमोल से उसके बेटे का जन्म रहस्य के बारे में बताते है तब, वह बहुत परेशान हो जाता है। अनमोल को यह भय था कि यह समाज उसके पुत्र सूर्या को नकारात्मक दृष्टि से देखेगा और उपेक्षित करेगा। अलैंगिक संतान के जन्म देने पर अनमोल के दर्द और भय को उपन्यासकार इस तरह बताया है कि "मैं उसे कहां-कहां बचाऊंगा। उस अंधेरे में मेरे सामने बस कुछ ही दृश्य घूम रहे थे -- ट्रेन के, शादी वाले मंडप के और ऐसे दृश्य... जिनकी कल्पना से ही मैं सिहर उठा।"[2] अनमोल यह सोचता है कि जो त्रासदियों उसके भाई के साथ हुई, वह उसके बेटे के साथ ना हो। इस समाज में लोग खुशी के समय हमारे साथ रहते हैं लेकिन दुखी से नहीं। इन्हीं स्वार्थी लोगों का सामना हमें हर रोज़ करना पड़ता हैं, लेकिन अनमोल इसकी परवाह नहीं करता। "जो समाज भूखे रहने पर कभी खाने को नहीं पूछता और अगर हमारे यहां रोज़ का खाना खाने के लिए भोजन है तो आये दिन हमें निमंत्रण देते हैं। आप उस समाज की बात कर रही हैं। मैं उस समाज को अपनी ठोकर पर रखता हूं जिसे किसी व्यक्ति की इज्ज़त करना नहीं आता।"[3]

दादी की स्वीकृति:

परिवार में बड़े बुजुर्गों तृतीय लिंग बच्चे को स्वीकृत करने से भी समाज में बदलाव आयेगा। आपस के लोग, पास-पड़ोसी लोगों के डर से छूटकर अपनी वंशानुवृत्त को स्वीकृत करना अच्छी बात है। लेखक इस उपन्यास में किन्नर सूर्या की दादी के माध्यम से व्यक्त करते हैं। दादी सोचती है कि अपने पोते को कभी भी उसके छोटे बेटे हर्षा जैसे अनादार होना नहीं चाहिए। वह अपने पोते को स्वीकार करती है। इसे वह अपनी वचनों में व्यक्त करती है देखिए- "कभी-कभार छिप कर देख लेता था माँ को सूर्या को प्यार करते हुए। उनकी आँखों में उसके लिए निश्छल ममता देख मुझे बड़ी तसल्ली होती थी।"[4]

सामाजिक प्रतिष्ठा

अनमोल के पिता रामलखन तिवारी जी गांव के प्रतिष्ठित जमींदार रहे, जिन्होंने सामाजिक घृणा की भय से अपने ही तृतीय लिंग बेटा हर्षा को जहर देकर मारने का प्रयास किया। ग्रामीण परिवेश में किन्नर का जीवन यापन अलग रहता है। बाबूजी को इस बात की चिंता है कि कहीं उसके बेटे को किन्नर समुदाय के लोग अपहरण न कर जाए। कस्तूरी इस इलाके की किन्नर मुखिया है। जमींदार के घर में बच्चे के जन्म का खबर सुनते ही वह अपने बिरादरी को लेकर आती है। तब बाबूजी अपने बेटे को देखने के लिए भी मना कर देते हैं। इस बात को सुनते ही कस्तूरी बहुत क्रोधित होती हैं और कहती हैं कि "पर एक बात नोट कर ले तिवारी। हिजड़े का बाप है तू, हिजड़े का! और इतना आसान न है समाज में एक हिजडे का बाप बनकर जीना"[5]

पिताजी का प्रोत्साहन

हर व्यक्ति के जीवन में अपने पिताजी बहुत मुख्य है। अगर पिताजी हमारे साथ है तो हम सारी दुनिया जीत सकते है। अनमोल, अपने बेटे सूर्या की पढ़ाई से लेकर सभी विषयों के

लिए उसके साथ देता है। सूर्या अपनी पढाई पूरा होने के बाद डिटेकटिव ऐजंसी खोलना चाहता है। इसके लिए सरकार से अनुमति लेना चाहता है। कमीश्नर आफिस से डिटेक्टिव ऐजंसी लाइसेंस के इंटरवयू के लिए आये दो व्यक्तियों में सूर्या भी एक था। लेकिन सूर्या अपने लिंग के बारे में सोचकर बहुत परेशान हो गया, अनमोल ने सूर्या को प्रोत्साहित करके बताया, "अगर कमीश्नर साहब को महिला के बेटे की ही लाइसेंस देना होता तो तुम्हें क्यों बुलाते? वे सिर्फ जान-पहचान के आधार पर लाइसेंस नहीं देना चाहते। तुम्हें अब दिखा देना कि तुम उस महिला के बेटे से अधिक काबिल हो।"[6]

पारिवारिक जिम्मेदारियों

तृतीय लिंगी अपने घर से बाहर आने के बाद भी अपने घरवालों को बहुत प्यार करते है। उनके स्नेह को भूल नहीं पाते हैं। अगर तृतीय लिंग उनके घर के पहला बच्चा है तो वह घर की जिम्मेदारियों को लेने के लिए भी तैयार होते हैं। लेकिन इस समाज की संकुचित चिंतन के कारण परिवारवालों से मिलजुल कर नहीं रह पाते हैं। वे अपरिचित लोगों के द्वारा अपने परिवार की भलाई करते हैं। आज के युग में, सामान्य बच्चे अपने पिता की जिम्मेदारी स्वीकार करने से इंकार कर देते है, लेकिन किन्नरों उनकी मां-बाप के लाभ-हानि में भाग लेने के लिए तैयार होते हैं। हर्षा अपनी बाबूजी की खेती जमीन को बचाने की जिम्मेदारी खुद लेता हैं। खेती जमीन को बचाने के लिए आठ लाख रुपया चाहिए। अपनी इस शारीरिक अविकसित अंग के कारण,इस समुदाय घृणा करने पर भी वह बेटे के रूप में अपने कर्तव्य को पूरा करता है। वह ईमानदारी से नाच-गान करके, बधाई देने से सिर्फ पचास हजार रुपया ही इकटठा कर सकता है। फिर भी अपनी बाबूजी की पूर्व जमीन को बचाने और बाबूजी की खुशी के लिए, वह वेश्यावृत्ति का काम अपनाता है। "मैं दूसरों में भी यह रोग फैलाऊँ–यह मेरे सिद्धांतों का हिस्सा नहीं था। मैं जुट गयी पैसा कमाने में दिन भर काम करती.....मैं अंदर से खोखली होती जा रही थी जब भी मन कमजोर होता, बाबू जी के चेहरे पर मुस्कान की कल्पना, मेरी आँखों में चमक ला देती।"[7]

मानसिक वेदना

किन्नर के जीवन संघर्ष और भावनात्मक अनुभूतियों को समझने के लिए कोई नहीं है इस समाज को समझाने के लिए कोई तरीका भी नहीं है जब हर्षा, कस्तूरी के डेरे में बस जाती है। ईमानदारी से काम करनेवाले किन्नर लोगों को भी इस समाज उनकी शारीरिक रचना के कारण अपराधी मानता है। हर्षा अपने मन के दुख को व्यर्थ करते हुए डायरी में लिखता है कि "क्या समाज में मुझ जैसे लोगों को जीने का कोई हक नहीं? वही समाज जिसका एक व्यक्ति मेरे साथ कुकृत्य करता है और उसका दोष भी मुझे दिया जाता है। वही समाज, जो अपने से अलग लोगों की इज्ज़त करना नहीं जानता। क्या यह सभ्य समाज है?[8]

निष्कर्ष - यह जिंदगी हमें अपनी गलतियां सुधारने का मौका तो अवश्य देती है। अनमोल को अपने बेटा सूर्या के रूप में अपनी गलती सुधारने का मौका मिलता है। आज की स्थिति में किन्नरों का समाज में कोई सुनिश्चित स्थान नहीं है। आगर सूर्या की तरह किन्नरों को उनके

परिवारवालों के समर्थन मिलेगा तो, जरूर समाज में भी उन्हें स्वीकृति मिलेगा और उनको अपने आपको साबित करने का मौका मिलगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भगवंत अनमोल, जिंदगी 50-50, राजपाल एंड संज़, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ.14
2. वही, पृ.28
3. वही, पृ.44
4. वही, पृ.53
5. वही, पृ.35
6. वही, पृ.180
7. वही, पृ.201
8. वही, पृ.161

9952951435

sridevipalani21@gmail.com